नाहटा बन्धु अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ९२००७)

मुख्य टाइटल
भाग-१
आत्म-निवेदन
निवेदन
अनुक्रमणिका
प्रथम खण्ड-जीवन परिचय
श्री अगरचन्द नाहटा वंशपरम्परा एवं जीवन परिचय ---------------------------------------३
नाहटा-वंशप्रशस्ति --८
श्रेष्ठिवर श्री अगरचन्दजी नाहटा और उनकी साहित्य साधना ----------------------------- ७९
श्री भंवरलाल नाहटा – व्यक्तित्व एवं कृतित्व -- ८८
श्रद्धेय श्री अगरचन्दजी नाहटाका बीकानेर-जैन लेखसंग्रह--------------------------------- १०४
श्री नाहटाजी द्वारा लिखित एवं सम्पादित कतिपय ग्रन्थ --------------------------------- १०९
द्वितीय खण्ड-श्रद्धा सुमन
श्रद्धाके ये प्रसून -- ११५
घणमोला नाहटाजीनै घणैमान -- ११५
अभिनन्दनम् --- ११६
अभिनन्दन -- ११६
श्रद्धांजलि --- ११७
अगरचन्द नाहटाजीका शत शत अभिनन्दन -- ११७
साहित्य-गगनके दीप्तिमान नक्षत्र, तुम्हें शत-शत प्रणाम ---------------------------------११८
श्रद्धांजलि --- ११९
सरस्वतीके वरद पुत्र -- ११९
श्रद्धांजलि --- १२०
साहित्य, संस्क-ति एवं सुजनताके प्रतीक --- १२०
ऐसे ज्ञानज्योति दिनकरका अभिनन्दन शत बार है ------------------------------------- १२२
विश्व-कोषमें अमर रहेगा अगरचंदका नाम -- १२३
श्री अगरचन्दजी नाहटाके प्रति -- १२३
अभिनन्दन -- १२४
गीत डिंगल --- १२५
तृतीय खण्ड-व्यक्तित्व, कृतित्व और संस्मरण
सन्देश --- १२९
यशस्वी पुत्र -- १२९
संशोधक नाहटाजी --१३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री नाहटा बन्धु --१३१
शासनके प्रतिभाशाली पुत्र श्री नाहटाजी --- १३२
संदेश -- १३२
अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी --- १३३
साहित्यिक सितारे नाहटाजी -- १३४
भारतीय संस्कृतिका सम्मान --- १३४
एक विशिष्ट संशोधक --- १३५
ज्ञानके अक्षय स्रोत नाहटाजी -- १३६
अभिवादन -- १३६
विद्वत्प्रवर श्री अगरचन्दजी नाहटा -- १३७
अभिनन्दनीय नाहटाजी -- १३८
विद्याव्यासंगी श्री नाहटाजी -- १३९
ख्यातिप्राप्त विद्वान् -- १४०
सरस्वतीका सुयोग -- १४०
धन्य नाहटाजी -- १४१
विरल साहित्यिक श्री नाहटाजी --- १४३
नवोदित लेखकवर्ग और श्री नाहटाजी --- १४४
आदरणीय नाहटाजी -- १४७
सरस्वतीके अनन्य सेवक --- १५०
अमित शोध-सामग्रीके भण्डार श्री अगरचन्द नाहटा ------------------------------ १५१
राजस्थानकी साहित्यिक विभूति -- १५३
विरोधाभासोंका समन्वय -- १५६
सरहस्वतीके अनन्य उपासक -- १५७
स्वाध्यायान्मा प्रमद के मूर्तस्वरूप नाहटाजी ------------------------------------- १६०
साहित्य-तपस्वी श्री नाहटाजी -- १६२
यत् क्रियते तन्नाधइकम् -- १६५
अनवरत साहित्योपासक -- १६६
बीकानेर और नाहटाजी --- १६८
विद्याप्रेमका एक जीवन्त प्रतीक, एक संस्था --------------------------------------- १६९
नाहटाजी ना हटे --- १७०
प्रेरणाप्रद व्यक्तित्वके धनी श्री नाहटा-बन्धु --------------------------------------- १७१
जंगम तीर्थ-श्री अगरचन्द नाहटा -- १७२
शोधयोगी श्री नाहटाजी -- १७४
विश्वकोषके लिए मेरे कोटिशः प्रणाम -- १७५
वन्दनीय नाहटाजी --- १७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विद्या ददाति विनयम् -- १७७
एक विरल व्यक्तित्व -- १७९
साहित्य गगनके देदीप्यमान -- १८०
जैसा मैंने जाना --१८१
विराट व्यक्तित्व एवं असीम कृतित्व --- १८२
श्रेष्ठि विद्वान् श्री नाहटाजी -- १८४
संस्कृति और साहित्यके लिए नाहटाजी की महान देन ------------------------------------ १८५
शोधपुरुष श्री नाहटाजी -- १८६
जैनसाहित्यके प्रकांड विद्वान नाहटाजी --- १८९
वाङ्मय पुरुष -- १९१
कर्मयोगी श्री नाहटाजी -- १९४
मित्रवर अगरचन्दजी नाहटा --- १९५
साहित्यिक-कल्पद्रुम नाहटाजी -- १९६
अनोखी प्रतिभाके धनी --- १९७
अद्भुत व्यक्तित्व -- १९९
अभिनन्दनीय नाहटाजी --- १९९
बहुमुखी प्रतिभाके धनी -- २००
आदर्श मार्गदर्शक --- २०१
शुभकामना --- २०१
स्वनामधन्य नाहटाजी -- २०१
इतिहासज्ञ नाहटाजी --- २०२
शोधाञ्जलि नाहटाजी -- २०२
पांडित्यपूर्ण व्यक्तित्व -- २०२
शोधकर्त्ताओंके हृदय-सम्राट --- २०३
अन्तरराष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त विद्वान् -- २०४
अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगीके प्रति श्रद्धा सुमनांजलि --- २०४
व्यक्तित्व महान् -- २०४
चिरंजीवी हों --- २०५
अभिनन्दनपर दो शब्द --- २०५
साहित्य महारथी -- २०५
अभिनन्दनीय नाहटाजी -- २०६
इतिहासके श्रेष्ठ पुजारी -- २०६
नाहटाजी-स्व. डॉ. वासुदेवशरण अग्रवालकी दृष्टिमें --- २०७
सरस्वती एवं लक्ष्मीका विरल संगम --२११
सेठ और साहित्य सेवी ---२११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुमुखी प्रतिभाके धनी नाहटाजी ---------- २१२
साहित्यिक सेठ श्री अगरचंद नाहटा ---------- २१४
शुभकामना ---------- २१४
साहित्यिक विभूति नाहटाजी ---------- २१४
अभिनन्दनीय श्री नाहटाजी---------- २१७
नाहटाजी एक जीवन्त संग्रहालय ---------- २१८
नाहटाजी समाजके भूषण ---------- २१९
श्री नाहटाजीका विशिष्ट व्यक्तित्व ---------- २२०
गुणोंके प्रति सहज आकर्षण ---------- २२१
राजस्थानकी साहित्यिक विभूति ---------- २२२
ज्ञानतपस्वी नाहटाजी ---------- २२४
अविस्मरणीय नाहटाजी ---------- २२५
अनवरत साहित्यप्रेमी ---------- २२६
ज्ञानप्रदीप श्री नाहटाजी ---------- २२७
पागाँ पेचाँदार, वाण्यो बीकानेरको ---------- २२९
सौजन्यमूर्ति नाहटाजी ---------- २३२
सच्चे साधक श्री अगरचन्दजी नाहटा ---------- २३३
सरस्वती और लक्ष्मीका अनोखा संयोग ---------- २३४
एक महान् व्यक्तित्व ---------- २३६
शोधमनीषी श्रेष्ठिवर श्री अगरचंदजी नाहटा ---------- २३७
मेरी दृष्टिमें अगरचन्दजी नाहटा ---------- २४०
विशिष्ट योगदान ---------- २४२
नाहटाजी एक विरल व्यक्ति ---------- २४२
आदर्श व्यक्तित्व ---------- २४४
साहित्य-उपवनका एक माली ---------- २४६
सर्वतोन्मुखी प्रतिभाके धनी नाहटाजी ---------- २४७
साहित्यकी साकार मूर्त्ति ---------- २४८
साहित्यके पुण्यश्लोक भगीरथ ---------- २४९
श्रद्धेय श्री अगरचन्दजी नाहटा-प्रथम दर्शन ---------- २५०
प्राचीन साहित्यके उद्धारक-नाहटाजी---------- २५२
मधुर स्मृति ---------- २५३
साहित्य-तपस्वी नाहटाजी ---------- २५६
शोध-वारिधि, नररत्न नाहटाजी ---------- २५७
मेरे प्रेरणा स्रोत---------- २५८
श्री शोधके अजस्र प्रेरणा-स्रोत ---------- २६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्रोत और सम्बन्ध -- २६२
एक महान् साहित्यिक संत -- २६३
राजस्थानीरा राजदूत -- २६५
नाहटाजी-एक संस्था -- २६८
जैन-साहित्यके शुभोदयका कणाद ऋषि -- २६९
एक व्यक्ति-एक युग -- २७१
नाहटा-बन्धु-मेरी दृष्टिमें -- २७२
अद्वितीय साहित्य-मनीषी -- २७६
प्रतिभा, कर्मठता एवं धर्मनिष्ठाके असाधारण धनी-नाहटाजी ---------------------------- २७८
कुतूहल, श्रद्धा और अपनेपनसे भरा वह नाम --- २८०
अगरचन्द नाहटा-प्राचीन साहित्यशोधक --- २८३
नाहटाजी-एक शिलालेखी व्यक्तित्व -- २८६
श्री अगरचन्द नाहटा-एक प्रोफाइल --- २८९
नाहटाजीके प्रति --- २९३
ज्ञान-सूर्य नाहटा --- २९४
श्री अगरचन्दजी नाहटा-एक परिचय -- २९७
नाहटाजीकी राजस्थानीके प्रति ममता -- २९९
साहित्य-साधक श्री नाहटाजी -- ३००
अनथक साहित्यखोजी-नाहटाजी -- ३००
सोध-निर्देशक अगरचन्दजी नाहटासे भेंट --- ३०२
नाहटाजीसा कृतित्व और व्यक्तित्व --- ३०४
साहित्य और कलाके सच्चे उपासक -- ३०५
व्यक्तित्व एवं संस्मरण -- ३०६
एक प्रेरक व्यक्तित्व -- ३०७
अग्रणी अध्येता-नाहटाजी -- ३०८
नाहटाजीसे प्रथम साक्षात्कार -- ३१०
न तस्य प्रतिमास्ति यस्य नाम महद यशः -- ३१२
महामनस्वी श्री नाहटाजी-- ३१३
विद्या व्यासंग शोधमनीषी -- ३१५
साहित्यमूर्त्ति श्री अगरचन्दजी नाहटा --- ३१७
शोधमनीषी श्री अगरचन्द नाहटा --- ३१८
अभिनन्दनमभिनन्दनीयस्य --- ३१९
लिखमी अर सरसुतीरा लाडला संत श्री अगरचन्दजी नाहटा ------------------------- ३१९
माँ राजस्थानीरा समरथ सपूत नाहटोजी -- ३२२
स्मृतिपथपर तैरते श्री नाहटाजी -- ३२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रद्धेय नाहटाजीसे भेंट ---- ३३०
वयोवृद्ध, तपोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध श्री नाहटाजी ---- ३३३
वन्दे महापुरुष, ते कमनीय कीर्तिम् ---- ३३४
नाहटाजी-एक सन्दर्भ-ग्रन्थ ---- ३३६
जैन इतिहास-रत्न-शोधशास्त्री श्री अगरचन्द नाहटा ---- ३३७
राजस्थानके गौरव एवं विद्वद्रत्न ---- ३४१
सरस्वतीके वरद-पुत्र-श्री अगरचन्दजी नाहटा ---- ३४२
भारतीय विद्याविदोंमें श्री अगरचन्द नाहटाका स्थान ---- ३४४
नाहटाजीका अभिनन्दन ---- ३४७
नाहटाजीके सान्निध्यमें ---- ३४९
श्री नाहटाजी शोधके प्रेरणास्रोत ---- ३५७
प्रबुद्ध चमकते जैन सितारे-श्री अगरचन्दजी नाहटा ---- ३५८
नाहटा बन्धुओंकी विशिष्ट उपलब्धि ---- ३६१
नाहटाजीका अद्भुत व्यक्तित्व ---- ३६३
हार्दिक अभिनन्दन ---- ३६३
मेरी दृष्टिमें श्री अगरचन्द नाहटा ---- ३६४
श्री अगरचन्द नाहटा-एक व्यक्तित्व ---- ३६६
श्री भँवरलालजी नाहटा ---- ३६८
श्री नाहटाजी जैनधर्मके सच्चे सेवक ---- ३६८
साहित्यके सितारे व शोधनिर्देशक श्री अगरचन्दजी नाहटा ---- ३६९
राजस्थानकी महान् विभूति श्री अगरचन्दजी नाहटा ---- ३७०
श्रेष्ठिवर श्री अगरचन्दजी नाहटा ---- ३७१
मूर्तिमान् ज्ञानकोष श्री नाहटाजी ---- ३७२
मरुभूमिकी देन-अनुकरणीय विद्यापति नाहटाजी ---- ३७६
संस्मरण ---- ३७६
ज्ञानके खोजी-श्रद्धेय नाहटाजी ---- ३८३
धन्य हो रहा अभिनन्दन करके जिनका अभिनन्दन ---- ३८५
वे पुरातत्त्ववेत्तासे तत्त्ववेत्ता बन गये ---- ३८६
भारतविख्यात विभूति ---- ३८६
अभयजैन ग्रन्थालयका २५ वर्षीय विकास ---- ३८९
आगन्तुक सम्मतियाँ ---- ३९४
श्री भँवरलालजी नाहटा ---- ४००
समाज सदा इनका ऋणी रहेगा ---- ४०२
सि. इ. वि. श्री अगरचन्द नाहटा ---- ४०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाग-२

संपादकीय निवेदन

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड-इतिहास और पुरातत्त्व

प्रतिहार काल में पूजित राजस्थान के कुछ अप्रधान देवी-देवता – डॉ. दशरथ शर्मा ----------३

मध्यकालीन मारु-गुर्जर चित्रकला के प्राचीन प्रमाण – डॉ. उमाकान्त प्रेमचन्द शाह --------- ७

पल्लू की प्रस्तर प्रतिमाएं – श्री देवेन्द्र हाण्डा -- ११

ओसियां – डॉ. ब्रजेन्द्रनाथ शर्मा ---१८

मध्यप्रदेश की प्राचीन जैन कला – प्रो. कृष्मदत्त वाजपेयी -------------------------------- २२

प्राचीन वज़्रमण्डल में जैनधर्‌म का विकास – श्री प्रभुदयाल भीतल ------------------------ २५

भारतीय नौसेना ऐतिहासिक सर्वेक्षण – श्री गायत्रीनाथ पंत ------------------------------- ३४

Chandra Images from Rajasthan – R. G. Agarwala -- 44

Prehistoric Background of Rajasthani Culture – V. N. Misra ------------------------------- 49

Mewar Painting – Kuwar Sangram Singh-- 68

Coins of the Malavas of Rajasthan – Shri Kalyan Kumar Das Gupta -------------------- 77

Tantric Culture Eastern India – Dr. Upendra Thakur -- 83

The Five Apbhramsa verses composed by Munja, the Paramara King of Malava – H. C. Bhayani -- 90

Jainism & Vegetarianism – Dr. A. N. Upadhye -- 94

Visvamitra in the Kalpasutra – Dr. Umeshchandra Sharma -------------------------------- 97

The Quest for a proper perspective in Vedic Interpretation – Prof. N. M Kansara -- 101

8th Century Document on means of earning money – Prof. Prem Suman Jain ----- 109

The Problem of Apadha in the Rgiveda – Dr. Smt. Y. S. Shah ------------------------- 115

A Method of Grow Crooked Bamboos for Palanquin Beams – Shri K. V. Varma-- 118

राजस्थान के शिलालेखों का वर्गीकरण – श्री रामवल्लभ सोमानी ------------------------ १२३

द्वितीय खण्ड-भाषा और साहित्य

पाणिनिकाल एवं संस्कृत में द्विवचन – श्री उदयवीर शास्त्री ------------------------------ १३६

संस्कृत के दो ऐतिहासिक चम्पू – डॉ. बलदेव उपाध्याय -------------------------------- १४२

महो. क्षमाकल्याण गणि की संस्कृत साहि-साधना – डॉ. दिवाकर शर्मा ------------------ १४६

प्राकृत के कुछ शब्दों की व्युत्पत्ति – डॉ. वसंत गजानन राहूरकर ------------------------ १५३

अपभ्रंश कथा काव्यों की भारतीय संस्कृतिको देन – डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल --------- १५५

अपभ्रंश का एक अचर्चित चरितकाव्य – डॉ.देवेन्द्रकुमार शास्त्री --------------------------- १६०

राजस्थान का युग-संस्थापक कथा-काव्य निर्माता हरिभद्र – डॉ. नेमीचन्द्र शास्त्री --------- १६७

तथाकथित हरिवंशचरियं की विमलसूरिकर्तृता-एक प्रश्न – डॉ. गुलाबचन्द्र चौधरी ---------- १७८

महाकवि रइधू की एक अप्रकाशित सचित्र कृति पासणाहचरिउ – डॉ. राजाराम जैन ------- १८२

शत्रुञ्जय तीर्थाष्टक – महो. विनयसागर -- १८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिल्ली पट्ट के मूलसंघीय भट्टारक प्रभाचन्द्र और पद्मनन्दि – पं. परमानन्द जैन शास्त्री -- १९१
अमरु शतक की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि – डॉ. अजयमित्र शास्त्री ---------------------------- १९८
कान्हडदे प्रबन्ध और उसका ऐतिहासिक महत्त्व – डॉ. सत्यप्रकाश ----------------------- २०७
कान्हडदे प्रबन्ध-सांस्कृतिक दृष्टिसे – मूल लेखक – डॉ. भोगीलाल सांडेसरा (अनुवादक-श्री जयशंकर शर्मा) --२११
रामरासोकार महाकवि माधवदास दधिवाड़िया – श्री सौभाग्यसिंह शेखावत ---------------- २२४
मेवाड़प्रदेश के प्राचीन डिंगल कवि – श्री देव कोठारी ------------------------------------ २२९
राजस्थानी बातों में पात्र और चरित्र-चित्रण – डॉ. मनोहर शर्मा ------------------------- २४५

तृतीय खण्ड-विविध

जैनतर्कशास्त्र में हेतु प्रयोग – डॉ. दरबारीलाल कोठिया ---------------------------------- २५९
जैन दर्शन में नैतिक आदर्श के विभिन्न रूप – डॉ. कमलचन्द्र सोगानी ------------------ २६४
ऐतरेय आरण्यकमें प्राण-महिमा – आचार्य विष्णुदत्त गर्ग -------------------------------- २६८
प्राचीन भारतीय वाङ्मय में प्रयोग – श्री श्रीरंजन सूरिदेव -------------------------------- २७२
श्री वल्लभाचार्यजी महाप्रभुजीका जीवन वृत्त – अध्या. केशवराम का. शास्त्री -------------- २७६
द्वैत-अद्वैत का समन्वय – श्री आनन्दस्वरूप गुप्त -- २८९
चित्रकाव्य का उत्कर्ष-सप्तसन्धान महाकाव्य – श्री सत्यव्रत तृषित ----------------------- २९७
शिवराज भूषण में गुसलखाना का प्रसंग – श्री वेदप्रकाश गर्ग---------------------------- ३०८
होथल निगाभरी और ओढ़ आम की सुप्रसिद्ध लोककथा का वस्तुसाम्य एवं इसके आधार पर विचार – श्री पुष्कर चन्दरावकर --- ३१२
तेजा लोक गीत का एक नया रूपांतर – श्री नरोत्तमदास स्वामी ------------------------- ३१९
रणछोड़ भट्ट कृत कुमारकाव्य और महाराणा प्रतापसे सम्बन्धइत दो विवादास्पद प्रश्न – श्री व्रजमोहन जावलीया --- ३२६
परिशिष्ट-१ – अगरचन्द नाहटा अभिनन्दनोत्सव समारोह का विवरण शुभ-कामना संदेश ---------- ३३१
परिशिष्ट-२ – बीकानेर में आयोजित अभिनन्दन समारोह के निमित्त सहयोगदाताओं की शुभ नामावली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org